unicef
for every child

# कोविड-19

## भेदभाव और अपमान के खिलाफ बच्चों की जंग

बच्चों द्वारा की गई
एक पहल

अइय्यो! तुमने हमारे पड़ोसी के दरवाज़े पर लगे **उस पोस्टर** को देखा? हर कोई उनके **गलत कामों** के बारे में बात कर रहा है।
HOUSE NO
क्या अम्मां??
ये लोग **विदेश से** लौटें हैं! तुम इनके साथ ज्यादा घुलना मिलना नहीं। उन्हें जानलेवा **कोरोना वायरस** है!
क्या ये लोग खतरनाक है।
अरे! अप्पा अम्मा, मुझे लगता है **ऐसा करना सही नहीं है!** मैंने टीवी पर सुना है और अखबार में भी पढ़ा है कि घबराने की कोई बात नहीं है। कोरोना वायरस बीमारी या COVID–19 यह हर उम्र के लोगों को बिना उनका स्थान, भाषा, जाति और धर्म को जानें, संक्रमित कर रहा है। हमें एक दूसरे के साथ **प्यार और दया के साथ व्यवहार** करना चाहिए क्योंकि इसमें हम सब एक साथ हैं।

# भेदभाव करना गलत है

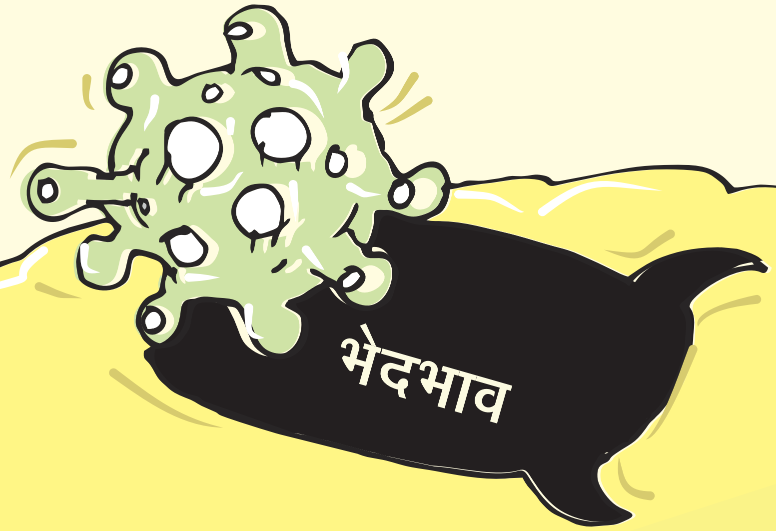


लोगों को यह जानने कि ज़रुरत है कि कोरोना वायरस किसी भी इंसान को संक्रमित कर सकता है। लोगों के साथ उनकी जाति, व्यवहार, खाने की आदत या उनके व्यवसाय को लेकर भेदभाव करना या उनका अपमान करना गलत है। बहुत से लोग डर के कारण वायरस होने पर भी नहीं बताते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि कहीं उन पर ''यही है वो जिसे कोरोना वायरस है'' का लेबल न लग जाए।

ऐसा होने पर हम सभी को खतरा हो सकता है। हमें अपने पालतू जानवरों के साथ भी नम्रता दिखानी चाहिए। यह समय सिर्फ मानवता और दया दिखने का है। गलत सूचना और गलतफहमियों को दूर करना हमारी ज़िम्मेदारी है।

# COVID-19 के कारण कौन-कौन भेदभाव का सामना कर रहा है?

**कुछ समुदाय के लोग दूसरों** की तुलना में ज्यादा भेदभाव का सामना कर रहे हैं।

**दूसरे देशों के लोगों** को भेदभाव का सामना करना पड़ रहा है।

**फ्रंटलाइन प्रोफेशनल्स** जैसे डॉक्टर, नर्स, सहायक डॉक्टर्स–नर्सेज, सेनेटरी कर्मचारी, आदि को अपमान और भेदभाव सहना पड़ रहा है।

लोगों को उनके **खाने की आदतों** से आंका जा रहा है।

यहां तक कि, कुछ लोग **अपने पालतू जानवरों का साथ छोड़ रहे** हैं क्योंकि उन्हें यह गलतफहमी है कि पालतू जानवर COVID–19 फैला सकते हैं।

जैसे WHO कहता है, अभी तक पालतू जानवर जैसे कुत्ते और बिल्ली से इंसानों में कोरोना वायरस फैलने का कोई सबूत नहीं है।

# यह समय है एक दूसरे की मदद करने का और एक दूसरे से जुड़े रहने का

# गलत सूचना और अफवाहें अपमान और भेदभाव का कारण बनती हैं

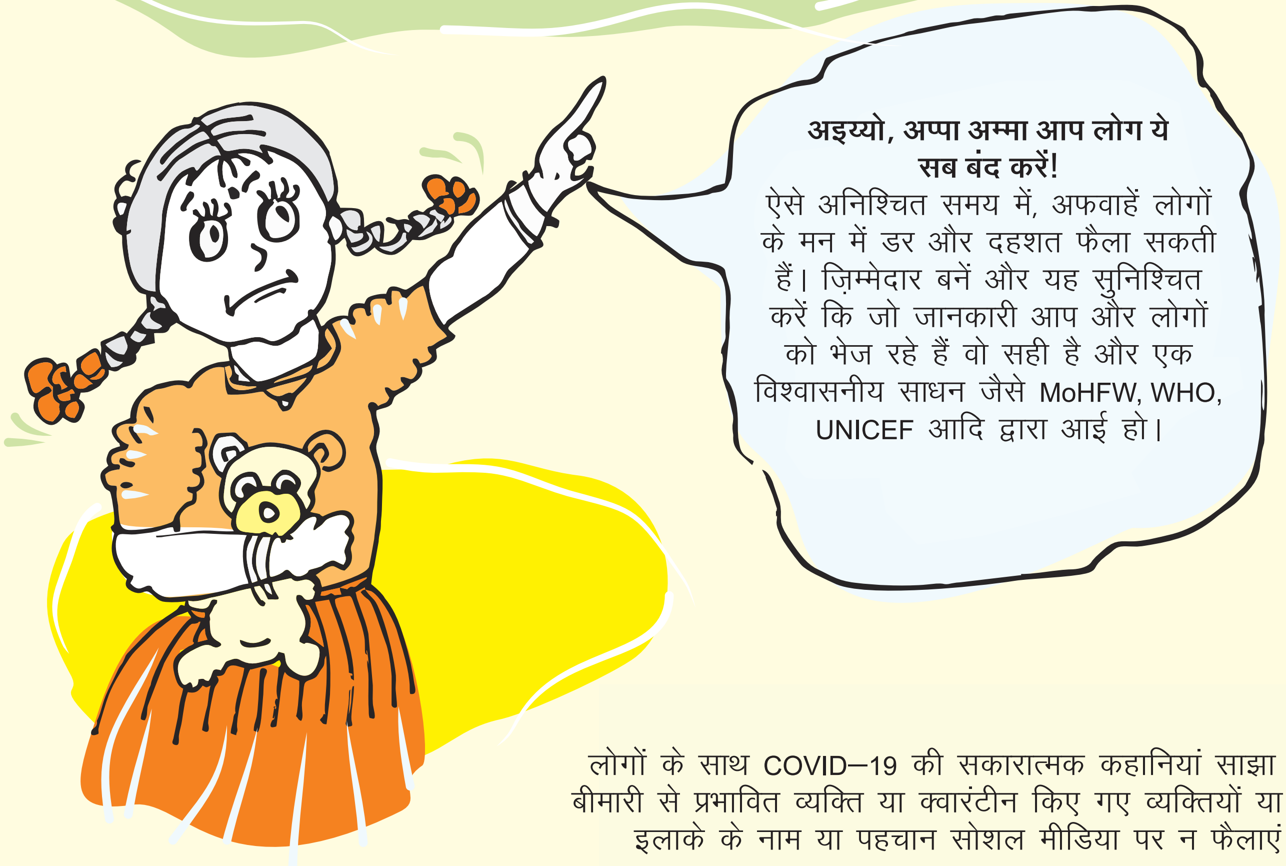


लोगों के साथ COVID–19 की सकारात्मक कहानियां साझा करें। बीमारी से प्रभावित व्यक्ति या क्वारंटीन किए गए व्यक्तियों या उनके इलाके के नाम या पहचान सोशल मीडिया पर न फैलाएं।

**गलत सूचना फैलाने से बचें।**

दरवाज़े पर स्टिकर का मतलब यह नहीं है कि उनके अंदर वायरस है। स्टिकर में कहा गया है कि लोग अपने यात्रा के इतिहास, नौकरी या सामाजिक दायरे के कारण घर में क्वारंटीन हैं। ज़रूरी नहीं कि वे संक्रमित हों। इसके अलावा **क्वारंटीन** केवल दिए गए समय के लिए ही है।
एम्बुलेंस
वाह! यह लोग **ठीक हो रहे** हैं। ये हमारे फाइटर हैं। तालियां! तालियां!
जो लोग अभी इलाज में हैं, उन्हें COVID–19 के पीड़ित कह कर न बुलाएं। उन्हें ''COVID–19 से ठीक हो रहे लोग कह कर संबोधित करें''।

**उन लोगों को प्यार और सम्मान दें जो इस कठिन समय में कड़ी मेहनत कर रहे हैं। वे यहां हमारी मदद करने के लिए हैं।**

ऐसे समय में ज़रूरी सेवाएं देने वालों की **सराहना करें** और उनके परिवारों का भी समर्थन करें।

उन्हें **"धन्यवाद"** कहें। वे हमारी सुरक्षा के लिए अपनी जान जोखिम में डालते हैं।

COVID–19 किसी को भी नसल के नाम पर भेदभाव करने का बहाना नहीं है। यह वायरस किसी भी इंसान का धर्म, जाति, क्षेत्र, भाषा इत्यादि देख कर नहीं आता है।

**अनेकता में एकता ही हमारी ताकत है।**

यह पूरी दुनिया के लिए एक महामारी है, इसलिए हम सब को एकजुट होकर इस बीमारी से लड़ने की ज़रुरत है ताकि आने वाला समय हमारे लिए अच्छा रहे।

# बच्चों द्वारा की गई इस पहल के बारे में

इंकलिंक चैरिटेबल ट्रस्ट ने UNICEF राज्य कार्यालय के साथ साझेदारी में तमिलनाडु और केरल के लिए बच्चों को ध्यान में रखकर COVID–19 के ऊपर इस पुस्तक को बनाया है। यह पुस्तक एक नाटक के तरीके से बनाई गई है। जिससे कि लोगों में डर और चिंता कम हो और वो लोग जिनके साथ अपमान और भेदभाव हो रहा है या जो COVID–19 से प्रभावित हैं, उनके बारे में बच्चों को बता सकें।

ऑनलाइन अभिविन्यास के माध्यम से कला और रचना को ध्यान में रख कर बच्चों द्वारा कुछ चित्र बनाए गए हैं, जिसमें इंकलिंक ने डिजिटल तरीके से बच्चों का मार्गदर्शन किया गया है। बनाए गए चित्र और कहानी को भी डिजिटल तरीके से इंकलिंक की युवा रचनात्मक टीम द्वारा अंतिम रूप दिया गया है।

InkLink Charitable Trust

unicef
for every child